Paper 8th

Date
Page

Que:— अमेरिकी गृहयुद्ध : कारण और परिणाम पर प्रकाश डालें।

Ans:— 1861 ई० से 1865 ई० तक चला अमेरिकी गृहयुद्ध अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच संघर्ष की गाथा है। इस गृहयुद्ध में धन और जन की भारी क्षति तो हुई; परन्तु एक सशक्त राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका का उदय भी हुआ।

अमेरिकी गृहयुद्ध के कारणों के विश्लेषण के क्रम में कई तरह की व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई है। एक सैद्धांतिक विचारधारा के अनुसार यह गृहयुद्ध पूर्णतः आर्थिक कारणों से प्रेरित और प्रभावित था। इस सिद्धांत का विचार है कि अमेरिका के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के पूँजीपतियों, श्रमिकों और स्वतंत्र कृषकों तथा दक्षिणी क्षेत्र के कुलीन कृषक समुदाय के बीच संघर्ष का यह एक चरण था। इस दृष्टि से अमेरिकी गृहयुद्ध को दो भिन्न अर्थव्यवस्थाओं के असमान हितों के बीच टकराव के रूप में देखा जा सकता है, जो अन्ततः प्रबल राजनीतिक विवाद में परिणत हो गया।

एक अन्य विचारधारा मार्क्सवादी तथ्यों को अपने विश्लेषण में शामिल करता है और गृहयुद्ध के वैचारिक पक्ष पर जोर देते हुए इसे पूँजीपति और सर्वहारावर्ग के बीच चलनेवाले संघर्ष का एक चरण मानता है। इस विचारधारा की मान्यता है कि अमेरिकी गृहयुद्ध एक बुर्जुआ क्रांति थी जिसने दक्षिणी क्षेत्र के कृषक समुदाय की प्रतिक्रांतिकारी शक्ति को समाप्त किया और इस तरह अनिवार्यतः पूँजीपति और श्रमिकवर्ग के निर्णायक संघर्ष के मार्ग को प्रशस्त किया।

कई अन्य इतिहासकार अमेरिकी गृहयुद्ध के लिए यद्यपि आर्थिक कारणों को स्वीकार करते है, परन्तु

इस गृहयुद्ध की व्याख्या अधिक व्यापक संदर्भ में करते हैं। वे अमेरिकी गृहयुद्ध को वस्तुत: दो संस्कृतियों के बीच संघर्ष मानते हैं जिसमें दोनो पक्षों के अपने-अपने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विचार तथा आदर्श थे। इन इतिहासविदों में से कुछ यह भी मानते है कि यह गृहयुद्ध दो अन्तर्विरोधी राष्ट्रीयता की भावना में टकराव का परिणाम था। इस तरह वे गृहयुद्ध को दक्षिणी राज्यों के 'स्वतंत्रता संघर्ष' के रूप में देखते और व्याख्यायित करते है।

कुछ अन्य इतिहासकार इस गृहयुद्ध को गलती से उत्पन्न हुए संघर्ष के अंतर्गत विश्लेषित करते हैं। उनका कहना है कि यह गृहयुद्ध कृत्रिम कारणों का परिणाम था। इस दृष्टिकोण की मान्यता है कि अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी भाग की आर्थिक स्थिति में एवं अन्य पक्षों में कोई इतना बड़ा अंतर या कोई ऐसी बिसंगति न थी जिसके कारण गृहयुद्ध अनिवार्य हो जाता। ये इतिहासविद् तर्क देते है कि दास प्रथा स्वत: एक मृत संस्था हो चली थी फलत:, इस मुद्दे पर टकराव का कोई सवाल ही नहीं था। यह तो मदद चंद राजनीतिज्ञ और कट्टरवादी नेता थे जिन्होने आम लोगों के बीच मौजूद अन्तर्विरोधों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया तथा उन्हे इतना भड़काया कि उनकी पारस्परिक शत्रुता और घृणा काफी बढ़ गई एवं गृहयुद्ध अनिवार्य हो गया।

एक अन्य विचारधारा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर अपना ध्यान केंद्रित कर गृहयुद्ध की व्याख्या करती है। इस विचारधारा की मान्यता है कि 1855 ई० 1860 ई० के बीच अमेरिका के दो प्रमुख राजनीतिक दल - डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन कमोबेश स्थानीय और राज्यस्तरीय विचारों के पोषक थे। दोनों दलों में

से किसी के पास न तो कोई राष्ट्रीय स्तर का दूरदर्शी नेता था और न ही कोई एकीकृत राष्ट्रीय नीति। फलतः, राजनीतिक पतवार-विहीन राष्ट्र असहाय परिस्थितियों में बहता-भटकता अंततः गृहयुद्ध के कगार पर जा पहुँचा।

एक अन्य सैद्धांतिक दृष्टिकोण नैतिक पक्ष को आधार बनाकर अपनी व्याख्या प्रस्तुत करता है। इनका कहना है कि दक्षिणी भाग में दास-प्रथा का अस्तित्व बरकरार था, जो उत्तरी भाग की जनता के लिए नैतिक संकट बन गया और उन्हें उत्तरी भाग के खिलाफ युद्ध लड़ना पड़ा।

विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रेरित इन विचारधाराओं में यद्यपि पारस्परिक मतभेद है, परन्तु कई सामान्य बिन्दुओं पर सहमति भी है। वे सभी मानते हैं कि अमेरिकी गृहयुद्ध के कई कारण थे जिनमें प्रमुख है - आर्थिक द्वेष और संघर्ष, दास-प्रथा के प्रति विरोध का रुख, राजनीतिक नेतृत्व की अक्षमता और निहित स्वार्थों द्वारा फैलाई गई घृणा से उत्पन्न अलगाववाद की भावना आदि। इन सभी कारकों ने सम्मिलित रूप से गृहयुद्ध को भड़काने में योगदान किया।

परन्तु, गृहयुद्ध का तात्कालिक कारण दास-प्रथा को बनाए रखने की प्रवृत्ति से सपन्न संघर्ष ही था। ऐसी स्थिति में उन परिस्थितियों का संक्षिप्त सर्वेक्षण आवश्यक है जिन्होंने गृहयुद्ध की शुरुआत की। 1789 ई० में लागू हुए संविधान ने संयुक्त राज्य अमेरिका को तेरह उपनिवेशों का संघ घोषित किया। ये सभी उपनिवेश अमेरिका की उत्तरी और दक्षिणी भाग में फैले हुए थे। इनकी स्थिति में मौलिक अंतर था। उत्तरी राज्यों में आधुनिक उद्योग-धंधे विकसित हो चुके थे। औद्योगिक रूप से संपन्न उत्तरी राज्य

के कारखानेदार इंगलैंड के माल से अपने उत्पादन की रक्षा के लिए संरक्षण की माँग करते थे। वे ब्रिटिश कारखानों में उत्पादित वस्तुओं के आयात पर ऊँची सीमा-शुल्क लगाए जाने की वकालत करते थे।

इसके विपरीत दक्षिणी राज्यों में औद्योगिक विकास नहीं के बराबर हुआ था। वे पूर्णतया कृषि-उत्पादन पर निर्भर थे। वहाँ मुख्यत: कपास की खेती होती थी, जो सारा का सारा इंगलैंड की सूती मिलों के लिए निर्यातित होता था। वे उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति के लिए भी इंगलैंड पर निर्भर थे। इस कारण दक्षिण के निवासी इंगलैंड के साथ घनिष्ठ से संबंध रखना चाहते थे और ब्रिटिश मालों पर चुंगी की ऊँची दर लगाए जाने के खिलाफ थे।

दोनों क्षेत्रों के मध्य इससे भी अधिक अंतर मजदूरों की मौलिक स्थिति को लेकर था। दक्षिणी राज्यों में कपास का उत्पादन पूर्णत: गुलामों के श्रम पर आधारित था। फलत:, इन राज्यों के भूस्वामियों का निहित स्वार्थ दास-प्रथा को बरकरार रखने में था। साथ ही दक्षिण के राज्यों के श्वेत लोगों की मन: स्थिति अभी ऐसी नहीं बन पाई थी कि वे अपनी सामाजिक व्यवस्था में हब्शी दासों को आत्मसात् कर सकें या स्वतंत्र हब्शियों के साथ मिलकर रहें। इन कारणों से दक्षिणी राज्यों में दास-प्रथा को कायम रखने पर पूरा जोर था।

परन्तु उत्तर के राज्यों को श्रमिकों की वैसी जरूरत नहीं थी। फलत:, वे दास-प्रथा के विरोधी थे। इन राज्यों में दास-प्रथा का उन्मूलन भी कर दिया गया था। इस भिन्न आर्थिक-सामाजिक परिवेश में उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच मतभेद बढ़ता गया। इसी दौरान

उत्तर-पश्चिम में अमेरिका का विस्तार आरंभ हुआ। इसके साथ ही यह विवाद का विस्तार उठ खड़ा हुआ कि उत्तर-पश्चिम में स्थापित नये राज्यों को संघ में 'दास-राज्य' के रूप में शामिल किया जाए अथवा 'मुक्त राज्य' के रूप में। सिनेट में संतुलन बनाए रखने के लिए दक्षिणी राज्यों ने यह माँग की कि किसी 'दास-प्रथा विहीन' प्रांत को संघ में तभी प्रवेश दिया जाए जबकि उसके साथ किसी 'दास-प्रथा से युक्त' प्रांत का भी प्रवेश हो। इस विवाद का समाधान 1820 ई० के मिसौरी समझौते द्वारा हुआ जिसके द्वारा यह तय हुआ कि मिसौरी समझौते द्वारा हुआ जिसके द्वारा यह तय हुआ कि मिसौरी को एक दास-राज्य के रूप में संघ में प्रवेश दिया जाए परन्तु भविष्य में मिसीसिपी के पश्चिम के भूभागों में निर्मित और 36°30' अक्षांश रेखा के समानान्तर उत्तर में अवस्थित किसी भी राज्य को मुक्त राज्य माना जाए।

1846 ई० में संयुक्त राज्य अमेरिका और मैक्सिको के बीच हुआ जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका ने टेक्सास से प्रशांत महासागरीय तट तक फैले हुए समूचे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। चूँकि, 1820 ई० का मिसौरी समझौता लुइसीनिया क्षेत्र पर ही लागू था, अतएव नवीन क्षेत्रों के संघ में प्रवेश को लेकर पुनः विवाद उठ खड़ा हुआ। इस क्षेत्र के राज्य कैलिफोर्निया ने 1850 ई० में एक संविधान की रचना कर दास-प्रथा को अस्वीकृत कर दिया। ऐसी स्थिति में दक्षिण के राज्यों ने कैलिफोर्निया के संघ में प्रवेश का तीव्र विरोध किया क्योंकि उन्हें भय था कि इससे अमेरिकी सिनेट और राष्ट्रपति के चुनाव

में उत्तर का पलड़ा भारी हो जाएगा। कैलफोर्निया को संघ में प्रवेश जरूर मिला, परन्तु दक्षिण के राज्यों को संतुष्ट करने के लिए 1850 ई० में एक कानून पारित किया गया कि दक्षिण से जो भगोड़े दास उत्तर पहुँचेंगे, उन्हें पकड़कर वापस कर दिया जाएगा।

1854 ई० में केन्सास - नेब्रास्का अधिनियम के पारित होने से दास - प्रथा से जुड़े विवाद में एक नई गर्मी आ गई। इस अधिनियम द्वारा 1820 ई० के मिसौरी समझौते को रद्द कर दिया गया और केन्सास - नेब्रास्का प्रांत में दास - प्रथा के प्रश्न पर निर्णय वहाँ के निवासियों पर छोड़ दिया गया जबकि मिसौरी समझौते के अनुसार इस प्रांत को संघ में प्रवेश दास - प्रथा विहीन राज्य के रूप में होना चाहिए था। यह दास - प्रथा के समर्थकों की बहुत बड़ी जीत थी। उन्हें सर्वोच्च न्यायालय के 1857 ई० में स्टाक निर्णय से और भी बल प्राप्त हुआ जिसमें कहा गया था कि काँग्रेस को दास - प्रथा समाप्त करने का अधिकार नहीं है।

इन बातों की उत्तरी राज्यों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। वहाँ एक नई रिपब्लिकन पार्टी का गठन किया गया जिसके दो सूत्री कार्यक्रम थे — (i) दास - प्रथा के विस्तार का विरोध करना और (ii) घरेलू उत्पादन की रक्षा के लिए चुँगी की ऊँची दर लगाना। इस तरह उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में मतभेद बढ़ता गया। इस परिस्थितियों में दक्षिणी राज्यों ने संघ से अलग होने का मन बना लिया। 1860 ई० में जब रिपब्लिकन पार्टी का उम्मीदवार अब्राहम लिंकन राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ तो दक्षिण के कपास - उत्पादक राज्यों - अल्बामा, फ्लोरिडा, मिसीसिपी, लुइसियाना, टेक्सास, जार्जिया - ने दक्षिणी कैरोलिना के नेतृत्व में 1861 ई० में संघ से अलग होने का फैसला किया। उन्होंने कन्फेडरेट स्टेट्स ऑफ अमेरिका के नाम से

जेफरसन डेविस की अध्यक्षता में एक नये महासंघ का अलग झंडा और संविधान स्वीकार किया गया।

नव-निर्वाचित राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने प्रथम भाषण में घोषित किया कि संघ अविभाज्य है और इस तरह कन्फेडरेट राज्यों की पृथकता गैर-कानूनी है। वस्तुतः इसी प्रश्न पर 1861-65 ई० का गृहयुद्ध लड़ा गया। इस तरह गृहयुद्ध का तात्कालिक कारण यह प्रश्न नहीं था कि दास-प्रथा को कायम रखा जाए कि नहीं, बल्कि यह प्रश्न था कि संविधान के अंतर्गत अलगाव की अनुमति है अथवा नहीं। लिंकन ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसका सर्वोपरि उद्देश्य संघ की एकता को कायम रखना है।

12 अप्रैल, 1861 को दक्षिणी कैरोलिना के सैनिकों ने संघ के एक शस्त्रागार पर बमबारी कर गृहयुद्ध की शुरुआत की। यह युद्ध अप्रैल, 1865 तक चला। युद्ध के दौरान ही 1 जनवरी, 1863 को ऐतिहासिक घोषणा जारी कर लिंकन ने सभी विद्रोही राज्यों में गुलामी प्रथा के उन्मूलन का ऐलान किया। गृहयुद्ध की समाप्ति उत्तरी राज्यों की जीत से हुई।

परिणाम - गृहयुद्ध ने अमेरिका के इतिहास में नवीन अध्याय का समावेश किया। इस युद्ध में धन और जन की भारी क्षति हुई। यह अनुमानित है कि युद्ध में लगभग 6 लाख आदमी मारे गए और अरबों डालर व्यय हुए। कई लाख व्यक्ति शारीरिक रूप से अपंग हो गए। स्वयं अब्राहम लिंकन की महायुद्ध की समाप्ति के ठीक पाँच दिन बाद हत्या कर दी गई। इसके कारण दक्षिणी राज्यों को उत्तरी राज्यों के उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। उन्हें बारह वर्षों तक सैन्य आधिपत्य और दक्षिणियों के प्रभुत्व में रहने को विवश किया गया।

परंतु, गृहयुद्ध ने संयुक्त राज्य अमेरिकी की एकता की रक्षा कर दी। इसके साथ ही यह कल्पना भी समाप्त हो गई कि संघ से कोई अंगीभूत राज्य पृथक भी हो सकता है। संपूर्ण अमेरिका में दासता का उन्मूलन कर दिया गया और दासों को अमेरिका नागरिकता के सभी अधिकार मिले।

गृहयुद्ध के उपरांत के दशकों में संयुक्त राज्य अमेरिका एक शक्तिशाली और संपन्न राष्ट्र राज्य के रूप में विश्व के रंगमंच पर उभरा। देश का बड़ी तेजी से औद्योगिकीकरण हुआ। छोटे-छोटे व्यावसायिक संस्थानों का स्थान विशालकाय कारपोरेशन लेने लगे। पिट्सबर्ग शिकागो और डेट्राइट आदि प्रमुख औद्योगिक नगरों के रूप में उभरे।